Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

आचार्य दण्डी का जीवन परिचय एवम् गुण विवेचन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

आचार्य दण्डी का जीवन परिचय एवम् गुण विवेचन

Anupam Sharma

Research Scholar

संक्षेपः – *संस्कृत काव्य-शास्त्र के इतिहास में वाल्मीकि एवं व्यास की तरह दण्डी का भी संस्कृत-साहित्य कवियों में अद्वितीय स्थान है। संस्कृत साहित्य में जहाँ कालिदास अपनी उपमा के लिए प्रसिद्ध है तो भारवि अपने अर्थ-गौरव के लिए प्रसिद्ध हैं वहीं दण्डी अपने पदलालित्य के लिए सर्वश्रेष्ठ माने गये है काव्य शास्त्र में गुण और अंलकार का घनिष्ठ सम्बन्ध है। जिस प्रकार नाटक अपने वाचिक अभिनय से प्रंशसनीय होता है, उसी प्रकार गुणो की उपयोगिता काव्य की शैली को समृद्ध बनाता है। गुणों के उपयोग से काव्य का स्वरूप सुशोभित होता है। गुणों का अभाव काव्य को क्लिष्ट बना देता है।*

मुख्य शब्द : *आचार्य दण्डी स्थितिकाल जीवन-परिचय, शिक्षा एवं पाण्डित्य, विभिन्न अभिमत, गुणों का विवेचन*

----------X----------

प्रस्तावनाः

दण्डी के स्थितिकाल की सीमा का निर्धारण करने में उनकी निज रचनाओं से सहायता प्राप्त होती है। इनके द्वारा रचित ''काव्यादर्श'' एवं ''अवन्तिसुन्दरी'' से इनके काल का केवल अनुमान लगाया जा सकता है।

गुणों का महत्व अधिकांश रुप में रचनाओं में दिखाई देता है। बिना गुणों के रचनाओं को प्रभावशाली नहीं नही बनाया जा सकता। किसी आचार्य ने गुणों को अंलकार कहा है , तो किसी ने रसों को गुणों का रुप दिया है। प्रत्येक आचार्य ने गुणो की अलग-अलग व्याख्या की है। अंलकारो और रसों से पूर्ण काव्य ही पूर्ण रुप से काव्य कहलाता है। अतः काव्य की सफलता के लिए गुणों का होना अत्यावश्यक है।

'अवन्तिसुन्दरी' कथा के अनुसार 'किरातर्जुनीय' नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि भारवि के तीन पुत्र थे, जिनमें मध्यम पुत्र का नाम मनोरथ था। मनोरथ के चार पुत्र हुए जिनमें सबसे छोटा वीरदत था, जो विद्वान दार्शनिक थे। इस भारवि के पौत्र वीरदत की पत्नि गौरी से दण्डी का जन्म हुआ। बचपन से ही दण्डी के माता-पिता का स्वर्गवास हो गया था। डा0 मानसिंह के अनुसार दण्डी दाक्षिणात्य थे और इनका निवास-स्थान काञ्ची थी। महाकवि दण्डी ने विविधशास्त्रों का अध्ययन किया था। अपने काव्यादर्श में उन्होंनें विद्वान मनुश्यों और अंलकार शास्त्रियों के विचारों का सामान्य वार्ता में संकेत किया है। संस्कृत साहित्य में दण्डी की रचनाएं इस प्रकार है-काव्यदर्श, अवन्तिसुन्दरी कथा, कल्प-परिच्छेद, छान्दोविचिति, मृच्छकटिक आदि। इन कृतियों में से कईयों का कतृत्व तो विवादस्पद है परन्तु महाकवि दण्डी की केवल तीन कृतिया अत्यन्त प्रसिद्ध है, वे हैं- काव्याद-र्, द-ाकुमार चरित तथा अवन्तिसुन्दरी। **इनकी तीन कृतियों के विषय में एक पद्य प्रसिद्ध है। जिसका अर्थ है -तीन अग्नियाँ, तीन देव, तीन वेद, तीन गुण, और दण्डी के तीन कृतियाँ तीनों लोको में प्रसिद्ध है।**

गुणों के संदर्भ में दण्डी से पूर्ववर्ती आचार्यो ने भी गुणों पर विवेचना की। जिसमें आचार्य भरत से लेकर पण्डित राज जगन्नाथ तक सभी काव्यशास्त्रीय आचार्यो ने गुण-विवेचन किया है। सर्वप्रथम आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र में काव्यगुणों को देखा जाता है। इसलिए भरत को सर्वप्रथम गुण-विवेचन कर्ता कहा जा सकता है, भरतानुसार दोष काव्य की शोभा के विधातक तथा गुण गुण काव्य :ाोभा के विधायक होते है। अतः भरत "काव्यादोशो के विपर्यय को काव्यगुण कहते हैं।"

गुणविपर्याद् एषा माधुर्योदायलक्षणाः।

अतएव विर्पयस्ता गुणाः काव्येशु किर्तिताः।

भरत ने मुख्य रुप से दस गुणों का वर्णन किया है-श्लेष, प्रसाद, समता, समाधि, माधुर्य, ओज, पदसौकुमार्य, अथव्यक्ति, उदारता और कान्ति काव्य गुण कहलाते है। उनके द्वारा बताए गए गुणों का वर्णन इस प्रकार है-

प्रसादः-

जो वाक्य अनेक बार सुनने या कहे जाने पर भी मन को उद्विग्न न करे तो 'माधुर्य' गुण होता है। भरतानुसार माधुर्य एक शब्दगत गुण है। यदि दिर्घ समास रहित रचना में माधुर्य गुण रहता है। यह शब्द-माधुर्य है। इनके अनुसार मधुर एवं कोमल कान्त पदावली की योजना माधुर्य गुण के लिए अत्यावश्यक है।

ओजः-

नाट्य शास्त्र में जो रचना अनेक समासिक तथा विचित्र पदों से युक्त हो तथा जिसका अर्थ उदार एवं ध्वनि जिसकी अनुराग मदी हो तो वहाँ 'ओज' गुण कहलाता है।

समताः-

जिस रचना में समस्त पद हो, वे व्यर्थ का अर्थ न प्रकट करते हों तथा दुर्बोध न हो तो उसे शब्दों की समानता के कारण 'समता' नामक गुण कहते है।

समाधिः-

नाट्य शास्त्र के पाठानुसार जहाँ प्रतिभा-ील व्यक्तियों के द्वारा वि-ेश अर्थ जिस रचना में देख लिया जाए उसे 'समाधि' गुण कहते है।

www.ignited.in

अर्थव्यक्तिः-

आचार्य भरतानुसार जिस रचना में लोक में अश्रिशय प्रसिद्ध हो तो उसे अर्थ -व्यक्ति कहते है। भरत इसे अर्थगत गुण मानते है।

उदारताः-

भरतानुसार उदारता गुण की बड़ी व्यापक धारणा प्राप्त होती है । भरत के अनुसार भाव से पूर्ण श्रृंगार तथा अद्‌भुत रसों से युक्त एवं अनेक भाव-सहित उदारता का गुण होता है।

पदसौकुमार्यः-

भरतानुसार जिसमें सुख से प्रयोग मे ंलाए जाने योग्य शब्दों की योजना होती है, जहाँ सुग्रथित सन्धियाँ होती है एवं जो सुकुमार अर्थ से युक्त होता है उसमें पदसौकुमार्य गुण माना जाता है।

कान्तिः-

भरतानुसार जब मन और कर्णेन्द्रिय को प्रसन्नता प्रदान करे या जो लीला आदि चेष्टालड्.कार के अर्थ से युक्त हो, वह कान्ति गुण माना जाता है। कान्ति की परिभाषानुसार मन को आह्लादित करने वाली लीला आदि का वर्णन आवश्यक होने के कारण यह अर्थगुण है।

लेशः-

भरत के अनुसार इष्ट अर्थो से परस्पर-सम्बद्ध पदों की श्लिष्टता को :लेश गुण कहा जाता है। :लेश गुण की मुख्य वि-ोशता यह है कि एक पद दूसरे पद के साथ इस प्रकार सम्बद्ध रहता है कि सभी पद मिलकर कवि के उद्दिश्ट अर्थ को व्यक्त कर देता है।

इस प्रकार भरत द्वारा वर्णित दस गुणों को कई परवर्ती आचार्यो ने स्विकार किया है। कुछ आचार्यों के गुणों के वर्णन में अन्तर है। भरत के बाद संस्कृत साहित्य में भामह का नाम आता है। जिन्होंने अपने काव्यालड्.कार में गुण के स्वरुप की विवेचना की है।

काव्य गुणों के सम्बन्ध में भामह की धारणा सर्वथा मौलिक है। उन्होंने भरत के दस गुणों के स्थान पर गुणों को केवल तीन रुपों में ही व्यक्त किया है। उनके द्वारा रचित काव्यालड्.कार में माधुर्य, ओज और प्रसाद इन तीन गुणों का ही वर्णन किया गया है। काव्यालड्.कार में माधुर्य, ओज और प्रसाद को कहीं भी गुण नही कहा गया है।

इनका आधार पदों के समास को माना गया है। जो श्रुतिसुखद एवं दीर्घ समास से रहित हो, वह काव्य 'मधुर' कहा जाता है। माधुर्य गुण के लिए रचना का श्रुति-मधुर होना एवं दीर्घ-समास-हीन होना आव-यक माना गया है। भामहानुसार प्रसाद गुण उस रचना में मान है जो विद्वान से लेकर नारी और शिशु तक के लिए भी बोधगम्य हो। इस प्रकार प्रसाद गुण के लिए अर्थ की सुगमता पर बल दिया गया है। भामह ने ओज-गुण का अभिधान चाहने वाले कुछ लोग बहुत पदों का समास कर देते है। जैसे- 'मन्दारकुसुमरेणुपिंजरितालका' (मन्दार के फूलों के पराग से पिञजरित अलकों वाली) इस प्रकार भामह ने अपने काव्यालड्.कार में केवल तीन गुणों का ही वर्णन किया है।

आचार्य भरत और भामह के बाद दण्डी का नाम आता है। केवल दण्डी ही एक ऐसे कवि माने गए है जिन्होंने काव्यगुणों पर विस्तार से वर्णन किया है। दण्डी एक अंलकारवादी कवि माने गए हैं। उनके द्वारा प्रणीत कृŸायों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

काव्यादर्श

आचार्य दण्डी द्वारा रचित ' काव्यादर्श ' काव्य-ाास्त्र का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है। यह अंलकार सम्प्रदाय एवं रीतिसम्प्रदाय का महŸवपूर्ण ग्रन्थ माना गया है। इसमें कुल मिलाकर 660 :लोक हैं। सबसे पहले ग्रन्थ में सरस्वती देवी की स्तुति की गई है। स्तुति के प-चात् काव्य की परिभाशा इस प्रकार दी है- 'अभीश्ट अर्थान्वित पद-समिश्ट काव्य की देह है। काव्य लक्षण के बाद उन्होंने काव्य भेदो का निरुपण किया है जो उनके अनुसार तीन प्रकार के है- गद्य-पद्य और मिश्र। छन्दो से युक्त तथा चतुश्पदी रचना पद्य होती है। यह पद्य दो प्रकार का है।- वृŸ। और जाति। जिसका नियमन वर्णो की संख्या के आधार पर होता है वह वृत कहलाता है जैसे मान्दाक्राता,शिखरिणी, :ादूर्लविक्रीड़ित इत्यादि।

द्वितीय परिच्छेद में अलंकारों का वि-ाद वर्णन देखने को मिलता है। इसमें अलंकार की परिभाशा तथा 35 अलंकारों के लक्षणोदाहरण प्रस्तुत हैं। तृतीय परिच्छेद में यमक एवं उसके 315 प्रकारों का निर्देश, चितबन्धगोमूत्रिका, सर्वतोभद्र एवं वर्ण नियम, 16 प्रकार की प्रहेलिका एवं दस प्रकार के दोशो का विवेचन है। काव्य-गुणों का वर्णन वि-ोश रुप से किया गया है। दण्डी के अनुसार--लेश, प्रसाद, समता, माधुर्य, सुकुमारता, अर्थव्यक्ति, उदारत्व, ओज, कान्ति और समाधि से इस गुण काव्य-ाोभादायक बताए गये है।

दशकुमार चरित

संस्कृत साहित्य में द-ाकुमार चरित गद्यकाव्य का अत्यन्त महŸवपूर्ण और विशिष्ट स्थान है। इस ग्रन्थ का विभाजन दो पीठिकाओं -पूर्वपीठिका एवं उŸारपीठिका के रुप में किया गया है। दोनों पीठिकाएं उच्छवासों में विभक्त हैं। इसमें दस कुमारो का चरित वर्णित है। पूर्वपीठिका तथा उŸारपीठिका के बीच मूलग्रन्थ है जिसके आठ उच्छ्वासों में दो कुमारों की कहानी है। पूर्वपीठिका को अवतरणिका स्वरुप तथा उŸारपीठिका को उपसंहार कहा जा सकता है। मूल ग्रन्थ में दण्डी ने राजा राम राज-वाहन एवं उनके साथ मित्रों की कथा का वर्णन किया है। पुश्पपुरी के राजा राजहंस ने युद्व में मालवाधी-ा मानसार को पराजित कर दिया। परास्त हुए एवं बन्दी मानसार पर दया करके राजहंस ने उसे मुक्त भी कर दिया और राज्य भी लौटा दिया। किन्तु पराजित मानसार तपस्या करके बलसम्पन्न हो जाता है और पुश्पपुरी पर आक्रमण करके राजा राजहंस को पराजित कर देता है। आहत राजहंस अपनी पत्नियों के साथ वन में रहने लगता है। वहीं राजा राजहंस के राजवाहन नामक पुत्र पैदा होता है। राजा के विभिन्न मंत्रियों के भी सात कुमार उत्पन्न होते हैं। राजा राजहंस के मित्र मिथिलानरेश प्रहारवर्मा के :ाब्रों के साथ युद्व में मारे जाने पर उनके दो शिशु पुत्र भी भाग्यवशात राजहंस के पास पहुंच जाते हैं। राजहंस इन दसों कुमारों - एक अपना पुत्र, सात मन्त्रिपुत्र, और दो दिग्विजय अभियान पर निकल पड़े, और यात्रा के बीच भाग्यवैपम्य से बिछुड़ कर अलग-अलग स्थानों पर पहुंच गए। कुछ वर्शो बाद सभी कुमार एक-एक करके राजवाहन से मिलते गए और अपनी यात्राओं , पराक्रमों ओर विचित्र विविध लोकानुभावों को नितान्त रोमांचक और मनोरञजक रुप में सूनाते रहे। इन्हीं साहसिक विजय गाथाओं का संग्रह दशकुमारचरित है।

अवन्तिसुन्दरी

यह महाकवि दण्डी की तृतीया कृति है। इसमें दण्डी का अपना कुल और पूर्वजों का वर्णन प्राप्त होता है। इसमें अवन्तिसुन्दरी और राजवाहन की कथा भी प्राप्त होती है। जो इस प्रकार है - बसन्तऋतु का आगमन, अवन्तिसुन्दरी और उसकी सहेली का नगर से दूर किसी उद्यान में प्रस्थान, राजपुत्री द्वारा मन्मथ के लिए अर्चना किया जाना। राजपुत्र राजवाहन को राजपुत्री के वन आगमन का पहले ही पता होने से दोनों का भी उसी उपवन में पहुंचना, राजवाहन को देखकर राजकन्या द्वारा यह निर्णय करने

www.ignited.in

में असमर्थ होना कि यह मानव है या मन्मथ चिरकाल तक राजवाहन को निहारते रहने के बाद अवन्तिसुन्दरी का लज्जाकर वृक्ष -तले आसीन होना, उधर राजवाहन द्वारा राजकन्या को देखकर यह निर्णय न कर पाना कि वह नारी है अथवा देवस्त्री।

अवन्तिसुन्दरी का लज्जा के कारण सखियों की पीछे छिप जाना, राजकुमारी का राजवाहन के लिए आसन तैयार करके उसे पुश्पोपहार प्रदान करना, राजकुमार को पूर्वजन्म का स्मरण हो आना कि उन्हें पूर्वजन्म में मुनि द्वारा :ाप दिए जाने के बाद यह कह जाना कि :ाप की अवधि समाप्त हो जाने पर राजवाहन को पूर्वजन्म का स्मरण आ जाएगा, राजवाहन को इन समस्त बातों का याद आ जाना, राजकुमारी के मनोगत भवों को विदित करने हेतू राजकुमार राजवाहन द्वारा वार्तालाप आरम्भ किया जाना, अवन्तिसुन्दरी के पास एक हंस का आना, बाल चन्द्रिका द्वारा हंस को पकड़ने के लिए आगे बढ़ने पर राजवाहन का कथा सुनाना कि :ाम्बनृप अपनी प्रिया सहित वन में गमन करता है। वहां हंस के दृश्टिगोचर होने पर यह हंस भी मुनि की तरह :ान्त है। नृप की बात सुनने के बाद मुनि द्वादा उस पृप को यह :ाप दिया जाना कि उसे स्त्री-विरह का दुःख झेलना पड़ेगा। :ाप श्रवणान्तर मुनि चरणों पर पड़कर नुप का क्षमा याचना करते हुए कहना कि उसका वह नगण्य-सा अपराध क्षम्य है। मुनि द्वारा नृप को कहा जाना कि अगले जन्म में निज प्रिया का अवलोकन करने पर उसके हृदय में उसके प्रति अनुराग जागृत होगा तथा उससे मिलन होने पर उसे पूर्वजन्म का स्मरण आ जाएगा, राजकुमार राजवाहन की कथा सुनने के उपरान्त राजकुमारी को पूर्वजन्म का स्मरण आ जाना, पहले जन्म का स्मरण आ जाने पर दोनों का प्रेममग्न होना, मालव महारानी का आगमन, दोनों का छिप जाना, माता के साथ राजपुत्री का प्रस्थान, राजवाहन का राजपुत्र अवन्तिसुन्दरी सहित पिता के पास जाने की याजना बनाना, राजबाहन का मालव नरे-ा को पराजित करना और अवन्तिसुन्दरी सहित पुश्पोउद्भव एवं बालचन्द्रिका से मिलना, सम्पूर्ण मालवदेश राजकुमार राजवाहन के अधीन आ जाना, राजवाहन और मित्रगणों का निज पत्नियों सहित निज पिता राजहंस के समीप बिन्ध्यवन में पहुंचना, माता-पिता को नमस्कार कर उनके चरण स्पर्श करना, राजकुमारों सहित राजा रानी का मुनि वामदेव के पास जाना, राजहंस द्वारा राजवाहन पर सम्पूर्ण वसुन्धरा का राज्यभार सौंपा जाना, राजहंस द्वारा वन में जाने की अभिलाशा प्रकट करना, परन्तु राजपुत्रों द्वारा उन्हें वानप्रस्थाश्रम में जाने से रोकना, मुनि वामदेव की आज्ञा से राजवाहन का उनके ही आश्रम में निवास करना, राजवाहन का स्वपत्नी सहित राज्य करना, समय-समय पर सभी राजकुमारों का राजवाहन के माता-पिता से मिलते आते रहना ये समस्त वर्णन दण्डी कृत अवन्तिसुन्दरी में दिखाई देता है।

उपसंहार

इस प्रकार दण्डी अनुसार तथा अन्य कवियों द्वारा किया गया गुणों का विवेचन देखकर कहा जा सकता है कि गुण धारणा के इतिहास में दण्डी का महŸवपूर्ण स्थान है। उन्होंने काव्य में गुण को जितना गौरवपूर्ण स्थान प्रदान किया, उतना किसी अन्य आचार्य ने नहीं। अतः दण्डी ने अपनी विवेचनानुसार कुछ गुणों को :ाब्दाश्रित और कुछ को अर्थाश्रित एव कुछ को :ाब्द और अर्थ दोनों पर आश्रित कहा है। दण्डी ने गुण और अंलकार दोनो ही को काव्य का :ाोभाकारक लक्षण होते है। ऐसे ही लक्षण गुणों में होते है। सुन्दर काव्य ैली के लिए गुणों का महŸवपूर्ण स्थान है। अच्छे या बुरे दोनों ही प्रकार के अंलकार काव्य शैली के गौण अंश के समान माने जाते है। दण्डी के अनुसार गुण काव्य की ैली के गौण अंश की काव्यात्मक अंलकारा के लिए प्रयुक्त किया है। :ाब्दालंकार और अर्थालंकार दोनो ही दो भिन्न अलंकार है। किन्तु दण्डी ने अर्थालड्कार पर अपेक्षाकृत अधिक ध्यान दिया गया है। उपमा अलंकार उनका मुढय अलंकार है। अलंकारो एवं गुणों का विवेचन दण्डी ने एक समान किया है।

अतः गुण और अलंकार दोनों ही काव्यात्मक श्रेश्ठता के लिए अनिवार्य है। गुण और अंलकार दोनो ही काव्य की ैली तथा स्वरुप दोनों को विभूशित करते है।

1. गुणविपर्याद् एशां माधुयौदार्यलक्षणाः।

   अतएव विर्पयस्ता गुणाः काव्येशु किर्तिताः।।

2. :लेशः प्रसादः समता सामधिमाधुर्ययमोजः पदसौकुमार्यम्।

   अर्थस्यश्च व्यक्तिरूदारताश्च कान्ति-च काव्यस्य गुणा दशै ते।

3. अप्यनुक्तो बुधैर्यत्र :ाबदोऽर्थो वा प्रतीयते।

   सुखशब्दार्थसंयोगत्प्रसादः सश्तु कीर्त्यते।

4. बहुशो यच्छुतं वाक्यमुक्तं वापि पुनः पुनः।

   नोद्वेजयति यस्माद्धि तन्माधुर्यमिति स्मृतम्।।

संदर्भ

भारतीय साहित्य के निर्माता (दण्डी) अध्याय-1 पृ0-8

काव्यादर्श, 3.95

किरतार्जुनीयम्, 15.14

सुबन्धु और दण्डी, पृ0-31

अवन्तिसुन्दरी, पृ-9

मम्मट, काव्य प्रका-ा, 8.66

नाट्य :ाास्त्र, 17.14

काव्यालड्कार, 2.3